शिशु के समग्र विकास हेतु

क्रियाकलाप एवं वातावरण

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

प्रकाशक एवं वितरक

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136-118

दूरभाष : 01744-294241 ई-मेल : vbukkkr@yahoo.co.in

वितरण-केन्द्र

भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर प्रदेश

भारतीय विद्या मंदिर परिसर, अम्बफला, वेद मंदिर, जम्मू-180 005

दूरभाष : 0191-2547953

E-mail: bssjmu2006@yahoo.com
bssjk08gmail.com

सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब

सर्वहितकारी केशव विद्या निकेतन, पठानकोट बाईपास, गुरु गोबिन्द सिंह एवेन्यू, नजदीक टेलीफोन एक्सचेंज, जालन्धर-144 009

दूरभाष : 0181-2421199, 2420876

E-mail: ses_jld@yahoo.co.in, ses.jld@gmail.com

हिमाचल शिक्षा समिति

हिम रश्मि परिसर, विकास नगर, शिमला-171 009 (हि.प्र.)

दूरभाष : 0177-2624624, 2620814

E-mail: shikshasamiti@sancharnet.in
himachalshikshasamitishimla@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136 118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-290241, 291156

E-mail: hsskkr@yahoo.co.in

ग्रामीण शिक्षा विकास समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136 118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-290241, 291156

E-mail: gsvskkr@yahoo.co.in

हिन्दू शिक्षा समिति-दिल्ली

डी.ए.वी.व.मा. विद्यालय क्र. 2, शंकर नगर, दिल्ली-110 051

दूरभाष : 011-22008542

E-mail: hindushikshasamiti@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति न्यास

गीता बाल भारती परिसर, राजगढ़ कॉलोनी, दिल्ली-110 031

दूरभाष : 011-22002957

E-mail: mahamantri_nyas@yahoo.co.in

समर्थ शिक्षा समिति-दिल्ली

माता मन्दिर गली, झण्डेवालान, नई दिल्ली-110 055

दूरभाष : 011-23628146, फैक्स : 23628146

E-mail: samiti59@live.com

प्रथम संस्करण : 2015

वैधानिक चेतावनी

यह पुस्तक विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक का प्रत्येक भाग सर्वाधिकार सुरक्षित है।

मुद्रक:

बुलबुल प्रिंटिंग प्रैस

१३६-१४०/५५, औद्योगिक क्षेत्र, चण्डीगढ़

दूरभाष: 09988338711 ई-मेल: bulbulpress@gmail.com

In'k

आत्मीय नम्रता दत्त

सप्रेम नमस्कार।

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा शिशुवाटिका पद्धति को सरल एवं सहज बनाने के लिए 'शिशु के समग्र विकास हेतु क्रियाकलाप एवं वातावरण' पुस्तक का प्रकाशन हो रहा है, अभिनंदनीय है। इस पुस्तक में शिशुवाटिका की संकल्पना, क्रियाकलापों के प्रकार, शिशुवाटिका में आवश्यक कार्यक्रम, शैक्षिक व्यवस्थाएँ, साधन सामग्री एवं उसका संस्कार पक्ष का विस्तृत परिचय दिया गया है। जब हम शिशुवाटिका को सरलता पूर्वक प्रस्थापित करने जा रहे हैं तब ही यह पुस्तिका हमारे लिए काफी मार्गदर्शिका के रूप में बन पायेगी। देश भर के शिशुवाटिका आचार्यों के लिए तो यह प्रतिदिन व्यक्तिगत कार्य में दिशा दे पायेगी।

आज हमारे पास यह शिशुवाटिका तत्त्व एवं व्यवहार, पुस्तक है परंतु व्यवहार पक्ष का और सहज, सरल रूप श्रीमती नम्रता जी ने बनाया है वह हम सब के लिए उपयोगी बनेगा।

शेष शुभ। नमस्कार।

भवदीया
आशा थानकी
शिशुवाटिका संयोजिका, विद्याभारती

iLrkouk

मूलतः शिशुशिक्षा/शिशुविकास का आधार है –' शिशु मनोविज्ञान' ।

शिशु अवस्था 0 से 5 वर्ष की है । यह कालखण्ड शिशु में संस्कारों के विकास का कालखण्ड है। इस समय में शिशु विकासशील ज्ञानेन्द्रियों से जो अनुभव प्राप्त करता है, उसकी अभिव्यक्ति कर्मेन्द्रियों के माध्यम से करना चाहता है और उसकी इसी इच्छा के कारण, उसकी कर्मेन्द्रियाँ सक्रिय होती हैं। ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के द्वारा ग्रहण किए गए सुसंस्कार ही उसके विकास एवं चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं।

उदाहरणार्थ – शिशु के द्वारा धागे में मोती पिरोना, एक क्रियाकलाप है। इस क्रियाकलाप के माध्यम से शिशु की आँख (ज्ञानेन्द्रिय) एवं हाथ (कर्मेन्द्रिय) दोनों का समन्वय तो होता ही है साथ ही उसकी एकाग्रता भी विकसित होती है अर्थात् मानसिकता का विकास तथा मोती के रंगों का संयोजन करने से उसका बौद्धिक विकास भी होता है।

अतः घर में अभिभावक एवं विद्यालय में आचार्य दीदी के लिए यह जानना आवश्यक है कि शिशु की ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को समन्वित करने के लिए किस प्रकार के वातावरण एवं क्रियाकलापों की आवश्यकता है।

अभिभावकों के लिए विद्यालय का अर्थ है – मात्र पढ़ना और लिखना अर्थात् 'औपचारिक शिक्षा'।

जबकि औपचारिक शिक्षा (पढ़ना, लिखना, गृहकार्य एवं परीक्षा आदि) को ग्रहण करने की पात्रता अभी शिशु के पास है ही नहीं।

शिशु का विकास तो क्रियाकलापों (activities) में अन्तर्निहित है अर्थात्' अनौपचारिक शिक्षा'। परन्तु 'अनौपचारिक शिक्षा' (खेल–खेल में शिक्षा) कहना जितना सरल है उसको समझना और करना उतना ही कठिन सा प्रतीत होता है। क्योंकि वास्तव में 'शिशु मनोविज्ञान' तो आचार्य प्रशिक्षण (Teacher's Training) का 'विषय' मात्र ही बनकर रह जाता है और व्यवहारिक धरातल पर इसका स्वरूप अभिभावकों को पसन्द ही नहीं आता। व्यवसायिकता की दौड़ में लगे अधिकांश विद्यालय भी अभिभावकों को प्रसन्न करने के लिए इस विषय को ताक पर रख देते हैं।

शिशु की क्षमताओं के विपरीत जब अभिभावक एवं आचार्य, शिशु को औपचारिक शिक्षा देने का प्रयास करते हैं तो शिशु को शिक्षा से अरूचि हो जाती है। ऐसी स्थिति में अभिभावक एवं आचार्य की निरन्तर डांट–फटकार शिशु को चिड़चिड़ा बना देती है।

अतः शिशु मनोविज्ञान को जानते और समझते हुए ही इस पुस्तक का निर्माण किया गया है। यह शिशु के विकास के व्यवहारिक धरातल पर आधारित है।

iLrd d lnfHkr v/;k; fuEufyf[kr g%&

1. शिशुवाटिका की संकल्पना।
2. शिशुवाटिका : क्रियाकलापों के प्रकार।
3. शिशुवाटिका : क्रियाकलाप।
4. शिशुवाटिका की शैक्षिक व्यवस्थाएँ।
5. शैक्षिक साधन सामग्री।
6. शैक्षिक व्यवस्थाओं में संस्कार पक्ष।
7. शिशुवाटिका के कार्यक्रम।

;g iLrd fdl d fy, g\

1. शिशुवाटिका में कार्यरत आचार्यों के लिए।
2. आचार्य प्रशिक्षण वर्ग में प्रशिक्षकों के लिए।
3. भारतीय जीवन दर्शन और शिशु मनोविज्ञान में आस्था रखने वालों के लिए।
4. अपने शिशु के विकास में सतत् चिन्तन एवं प्रयत्न करने वाले अभिभावकों के लिए।

सुश्री इन्दुमति काटदरे जी की पुस्तक ^f'k'kokfVdk rRo ,o 0;ogkj* से अभिप्रेरित होकर यह संक्षिप्त रूप आप की सेवा में प्रस्तुत है। मैं इन्दुमति दीदी की आभारी हूँ।

आपके सुझाव मेरे लिए दिशासूचक होंगे। कृपया मार्ग प्रशस्त अवश्य करें।

uerk nRr

f'k'kokfVdk lg&iem[k
fo|k Hkkjrh] mRrj {k=

शिशु के समग्र विकास हेतु क्रियाकलाप एवं वातावरण

v/;k;

1-	f'k'kokfVdk dh ldYiuk	6
2-	f'k'kokfVdk & fØ;kdykiksa dk izdkj	11
3-	f'k'kokfVdk & fØ;kdyki	14
4-	f'k'kokfVdk dh 'kf{kd 0;oLFkk,a	31
5-	'kf{kd lk/ku&lkexh	45
6-	'kf{kd 0;oLFkkvksa esa lLdkj i{k	47
7-	f'k'kokfVdk dk dk;Øe	48

v/;k; 1-
f'k'kokfVdk ladYiuk

f'k'kokfVdk D;k gS\

'शिशुवाटिका' शिशु को शिक्षा देने का कोई औपचारिक विद्यालय नहीं है। अपितु शिशु को सुसंस्कारित करने हेतु उपयुक्त वातावरण देने वाली एक 'वाटिका' है।

इस को निम्नलिखित परिप्रेक्ष्य में भी समझा जा सकता है :–

- नर्सरी, किण्डर गार्टन, मांटेसरी आदि अन्य शिक्षण पद्धतियों का भारतीय विकल्प है– शिशुवाटिका।
- भारत में शिशु शिक्षा के क्षेत्र में, आमूल परिवर्तन लाने के प्रयास हेतु विद्या भारती की संगठित योजना है–शिशुवाटिका।
- गर्भाधान से पाँच वर्ष के शिशु की विकास प्रक्रिया है– शिशुवाटिका।
- परिवार, समाज, शिक्षा जगत में वर्तमान शिशु शिक्षा को सही दृष्टि देने के लिये एक प्रभावी आंदोलन है– शिशुवाटिका।

f'k'kokfVdk dk mís';

1. शिशु शिक्षा के विषय में शिक्षा जगत को सही दिशा देना।
2. शिशु शिक्षा के भारतीय स्वरूप की दृष्टि से समाज को जागृत करना।
3. शिशु शिक्षा की भारतीय पद्धति विकसित करना।
4. घर एवं परिवार को शिशु संस्कार के लिये संस्कारक्षम बनाना।

f'k'kokfVdk dk Lo:i

1. शिशु के समग्र विकास की दृष्टि से ।
2. भारतीय जीवन दर्शन एवं संस्कृति का अधिष्ठान।
3. भारतीय मनोविज्ञान के आधार पर।
4. प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में नहीं अपितु शिशु शिक्षा का स्वतंत्र स्वरूप ।
5. विद्यालय के साथ–साथ घर के संदर्भ में विचार।
6. गर्भाधान से 5 वर्ष की आयु तक का विचार ।

f'k'kqokfVdk dh fo'ks"krk,¡

1. शिशु केन्द्रित, क्रिया आधारित, संस्कारक्षम, आनन्ददायक, अनौपचारिक शिक्षा पद्धति का विकास।
2. पांच वर्ष की आयु तक, औपचारिक शिक्षा अर्थात् पाठ्यपुस्तकें, पाठ्यक्रम, समय–सारिणी, कक्षा/गृहकार्य एवं परीक्षा आदि पूर्णतः वर्जित ।
3. आनन्ददायक क्रियाकलापों के माध्यम से, ज्ञानेन्द्रियों द्वारा सहज अनुभव कराना एवं कर्मेन्द्रियों द्वारा स्वतंत्र अभिव्यक्ति कराना अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की कुशलता का विकास करना।
4. पांच वर्ष तक की आयु में शिशु 89 प्रतिशत संस्कार ग्रहण कर लेता है और इस संस्कार प्रक्रिया का मूल केन्द्र 'घर' है तथा मुख्य भूमिका 'परिवार' की है अतः शिशुवाटिका, 'परिवार–प्रशिक्षण' का केन्द्र है।
5. प्रेम,आनन्द, स्वतंत्रता, सहजता, और सौन्दर्य, शिशु शिक्षा के मूल आधार हैं।

f'k'kqokfVdk dk dk;{k= %&

1. शिशु शिक्षा 2. आचार्य शिक्षण–प्रशिक्षण 3. परिवार शिक्षा एवं समाज प्रबोधन
4. शिशु शिक्षा जगत को दिशा–दर्शन

vkb;s bl ij Øe'k% nf"V Mkysa %&

1- f'k'kq f'k{kk %&

शिशुवाटिका के क्रियाकलाप	शिशुवाटिका की शैक्षिक व्यवस्थाएँ	शिशुवाटिका के कार्यक्रम
वार्तालाप	चित्र पुस्तकालय	वन्दना सभा
कहानी	रंगमंच	भोजन/समूह भोजन
नाटक	क्रीडांगण	प्रथम दिनोत्सव
गीत	बगीचा	जन्म दिनोत्सव
संगीत	कलाशाला	शिशु–सभा
योग	कार्यशाला	उत्सव और पर्व मनाना
साज–सज्जा	घर	संगीत–सभा
श्लोक,सूत्र एवं मंत्र पाठ	विज्ञान प्रयोगशाला	शोभा यात्रा
खेल	चिड़ियाघर	वार्षिकोत्सव
बागवानी	वस्तु संग्रहालय	भ्रमण
उद्योग	प्रदर्शनी कक्ष	शिशु शिविर
दैनन्दिन जीवन व्यवहार	तरणताल	शिशु नगरी
प्रयोग		विद्यारम्भ संस्कार
निरीक्षण		खेलकूद दिवस

2- vkpk;Z f'k{k.k&izf'k{k.k %& शिशुवाटिका के आचार्य को , शिशु मनोविज्ञान का ज्ञान होना अनिवार्य है। शिशु शिक्षा के लिए, आचार्य में, संगीत, अभिनय, खेलकूद और हस्त उद्योग आदि में निपुणता तथा कल्पनाशीलता एवं वार्तालाप में कुशलता को विकसित करने की आवश्यकता है । इस दृष्टि से आचार्यों को सतत् शिक्षण और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है । आचार्य सम्मेलन, कार्यशाला, अभ्यास वर्ग, प्रशिक्षण वर्ग एवं चिन्तन गोष्ठी आदि के माध्यम से आचार्य को प्रशिक्षित करना शिशुवाटिका के कार्यक्षेत्र का अभिन्न अंग है ।

3- ifjokj f'k{kk ,oa lekt izcks/ku %& शिशु शिक्षा, 'विद्यालय' से अधिक, 'घर' का विषय है । माता–पिता एवं परिवारजनों का वैचारिक दृष्टिकोण, व्यवहार और वार्तालाप आदि शिशु विकास को प्रभावित करता है। अतः घर के वातावरण को संस्कारक्षम बनाने एवं शिशु के विकास में माता–पिता को सक्षम बनाने की दृष्टि से परिवार शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है । अतः परिवार प्रशिक्षण, परिवार प्रबोधन, परिवार संपर्क, मातृ सम्मेलन/गोष्ठी और प्रदर्शनी आदि कार्यक्रमों के माध्यम से ,परिवार को शिक्षित करना शिशुवाटिका का महत्वपूर्ण कार्य है ।

(विद्याभारती द्वारा 'घर ही विद्यालय' पुस्तक का प्रकाशन, परिवार प्रशिक्षण हेतु ही किया गया है ।)

शिशु की शिक्षा एवं विकास मात्र परिवार का ही विषय नहीं है अपितु समस्त समाज की चेतना एवं जागृति का भी विषय है । अतः समाज का प्रबोधन करना भी शिशुवाटिका का ही दायित्व है। इसके निमित्त संदर्भित साहित्य का वितरण करना , होर्डिंग्स लगाना, नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन करना आदि जैसे कार्य करना भी शिशुवाटिका विभाग का कार्य है । इसके लिए जन सभायें/सम्मेलन आदि का आयोजन करना होगा । दूरदर्शन और प्रशासन आदि का सहयोग भी लिया जा सकता है।

4- f'k'kq f'k{kk txr dk fn'kk&n'kZu %& शिक्षा के घटक – 'घर एवं विद्यालय' को शिशु शिक्षा की स्पष्ट दिशा न होने से पैदा हुई अज्ञानता के कारण, कुछ भ्रान्तियाँ भी उत्पन्न हो गई हैं, जिसके परिणामस्वरूप शिशु शिक्षा महज एक आडम्बर बनकर रह गई है। जैसे :– छोटी आयु (दो से ढाई वर्ष) में ही औपचारिक शिक्षा (पढ़ना–लिखना और परीक्षा आदि) का बोझ डालना , अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाना और बदले में अभिभावक से अधिकतम शिक्षण शुल्क लेना, आज विशेष प्रचलन में है । यह अज्ञानता अनुचित महत्वाकांक्षा को जन्म देती है । इसके दुष्परिणाम शिशु को ही भुगतने पड़ते हैं । अतः शिशु मनोविज्ञान के अनुरूप ही शिशु शिक्षा की योजना बने इसके लिए शिशु शिक्षा जगत को जागृत करने का दायित्व भी शिशुवाटिका का है ।

हर राष्ट्र का अपना जीवन–दर्शन होता है। उस जीवन–दर्शन को सीखने और सिखाने की पद्धति भी अपनी ही होनी चाहिए। भारत का जीवन–दर्शन सिखाने के लिए इग्लैंड, जर्मन या फ्रांस की शिक्षण पद्धतियों को नहीं अपनाया जा सकता। अतः यह आवश्यक है कि हम आदर और निष्ठा से भारतीय जीवन–दर्शन एवं संस्कृति पर आधारित शिशु शिक्षा के लिए 'शिशुवाटिका' की योजना को अपनाएँ।

ckyd d: lex: fodkl dh nf"V l&

शिशु, नन्हें, बीज में छिपे वृक्ष की भांति हैं। अतः जिस प्रकार छोटे बीज को उपयुक्त वातावरण देकर, अच्छे फल के लिए तैयार किया जाता है, उसी प्रकार शिशु के भी समग्र विकास की चिन्ता इसी अवस्था से करनी होगी।

lex: fodkl e: %& 1. व्यक्तित्व विकास (अर्थात् शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक, और आध्यात्मिक विकास), 2. समष्टिगत विकास (अर्थात् पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक और सृष्टिगत) 3. परमेष्ठिगत विकास (अर्थात् आत्मा और परमात्मा का ज्ञान) सम्मिलित है ।

समग्र विकास के उद्देश्यों को तीन भागों में विभाजित किया गया है। ये तीन भाग हैं :–

1. जीवन का घनिष्ठत्तम अनुभव।
2. संस्कार एवं चरित्र निर्माण।
3. विभिन्न क्षमताओं का विकास।

तालिका के 'अवलोकन' से, एक दृष्टि में 'बालक के समग्र विकास' को जाना और समझा जा सकता है।

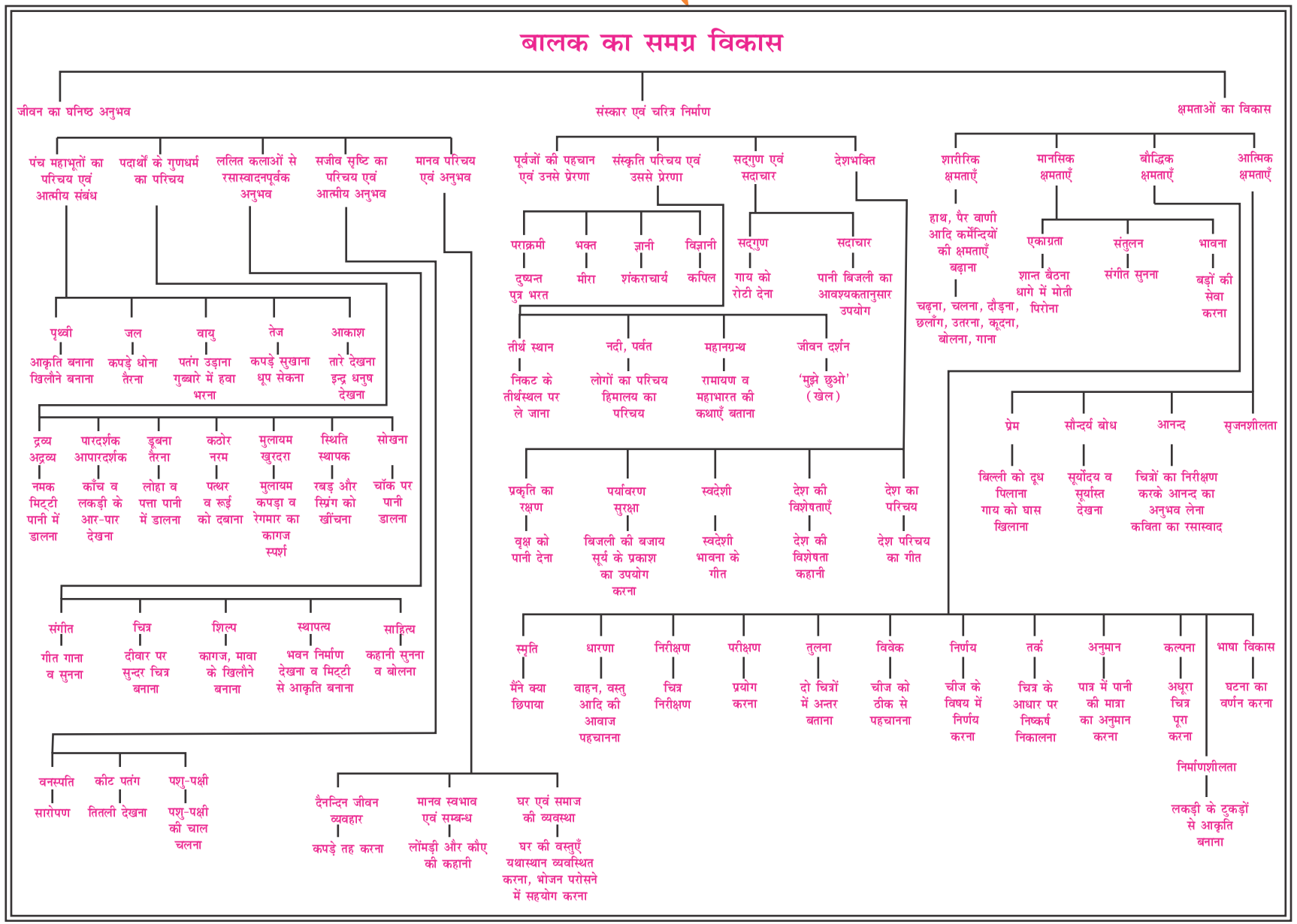

बालक का समग्र विकास

- जीवन का घनिष्ठ अनुभव
  - पंच महाभूतों का परिचय एवं आत्मीय संबंध
    - पृथ्वी — आकृति बनाना खिलौने बनाना
    - जल — कपड़े धोना तैरना
    - वायु — पतंग उड़ाना गुब्बारे में हवा भरना
    - तेज — कपड़े सुखाना धूप सेकना
    - आकाश — तारे देखना इन्द्र धनुष देखना
  - पदार्थों के गुणधर्म का परिचय
    - द्रव्य अद्रव्य — नमक मिट्टी पानी में डालना
    - पारदर्शक आपारदर्शक — काँच व लकड़ी के आर-पार देखना
    - डूबना तैरना — लोहा व पत्ता पानी में डालना
    - कठोर नरम — पत्थर व रूई को दबाना
    - मुलायम खुरदरा — मुलायम कपड़ा व रेगमार का कागज स्पर्श
    - स्थिति स्थापक — रबड़ और स्प्रिंग को खींचना
    - सोखना — चॉक पर पानी डालना
  - ललित कलाओं से रसास्वादनपूर्वक अनुभव
    - संगीत — गीत गाना व सुनना
    - चित्र — दीवार पर सुन्दर चित्र बनाना
    - शिल्प — कागज, मावा के खिलौने बनाना
    - स्थापत्य — भवन निर्माण देखना व मिट्टी से आकृति बनाना
    - साहित्य — कहानी सुनना व बोलना
  - सजीव सृष्टि का परिचय एवं आत्मीय अनुभव
    - वनस्पति — सारोपण
    - कीट पतंग — तितली देखना
    - पशु-पक्षी — पशु-पक्षी की चाल चलना
  - मानव परिचय एवं अनुभव
    - दैनन्दिन जीवन व्यवहार — कपड़े तह करना
    - मानव स्वभाव एवं सम्बन्ध — लोमड़ी और कौए की कहानी
    - घर एवं समाज की व्यवस्था — घर की वस्तुएँ यथास्थान व्यवस्थित करना, भोजन परोसने में सहयोग करना
- संस्कार एवं चरित्र निर्माण
  - पूर्वजों की पहचान एवं उनसे प्रेरणा
    - पराक्रमी — दुष्यन्त पुत्र भरत
    - भक्त — मीरा
    - ज्ञानी — शंकराचार्य
    - विज्ञानी — कपिल
  - संस्कृति परिचय एवं उससे प्रेरणा
    - तीर्थ स्थान — निकट के तीर्थस्थल पर ले जाना
    - नदी, पर्वत — लोगों का परिचय हिमालय का परिचय
    - महानग्रन्थ — रामायण व महाभारत की कथाएँ बताना
    - जीवन दर्शन — 'मुझे छुओ' (खेल)
  - सद्‌गुण एवं सदाचार
    - सद्‌गुण — गाय को रोटी देना
    - सदाचार — पानी बिजली का आवश्यकतानुसार उपयोग
  - देशभक्ति
    - प्रकृति का रक्षण — वृक्ष को पानी देना
    - पर्यावरण सुरक्षा — बिजली की बजाय सूर्य के प्रकाश का उपयोग करना
    - स्वदेशी — स्वदेशी भावना के गीत
    - देश की विशेषताएँ — देश की विशेषता कहानी
    - देश का परिचय — देश परिचय का गीत
- क्षमताओं का विकास
  - शारीरिक क्षमताएँ — हाथ, पैर वाणी आदि कर्मेन्द्रियों की क्षमताएँ बढ़ाना — चढ़ना, चलना, दौड़ना, छलाँग, उतरना, कूदना, बोलना, गाना
  - मानसिक क्षमताएँ
    - एकाग्रता — शान्त बैठना धागे में मोती पिरोना
    - संतुलन — संगीत सुनना
    - भावना — बड़ों की सेवा करना
  - बौद्धिक क्षमताएँ
    - स्मृति — मैंने क्या छिपाया
    - धारणा — वाहन, वस्तु आदि की आवाज पहचानना
    - निरीक्षण — चित्र निरीक्षण
    - परीक्षण — प्रयोग करना
    - तुलना — दो चित्रों में अन्तर बताना
    - विवेक — चीज को ठीक से पहचानना
    - निर्णय — चीज के विषय में निर्णय करना
    - तर्क — चित्र के आधार पर निष्कर्ष निकालना
    - अनुमान — पात्र में पानी की मात्रा का अनुमान करना
    - कल्पना — अधूरा चित्र पूरा करना
    - निर्माणशीलता — लकड़ी के टुकड़ों से आकृति बनाना
    - भाषा विकास — घटना का वर्णन करना
  - आत्मिक क्षमताएँ
    - प्रेम — बिल्ली को दूध पिलाना गाय को घास खिलाना
    - सौन्दर्य बोध — सूर्योदय व सूर्यास्त देखना
    - आनन्द — चित्रों का निरीक्षण करके आनन्द का अनुभव लेना कविता का रसास्वाद
    - सृजनशीलता